No : 7

इस्लाम क्या है ?

ما هو الاسلام ؟

(باللغة الهندية)

COOPERATIVE OFFICE FOR CALL AND GUIDANCE-BAT'HA

P.O.BOX. 20824. RIYADH,11465.
TEL.4030251/4034517/4030142
FAX NO. 4059387

UNDER THE SUPERVISION OF
THE MINISTRY OF ISLAMIC AFFAIRS, ENDOWMENTS, PROPAGATION & GUIDANCE

للحصول على مزيد من هذه النسخة نأمل الاتصال على المكتب

इस्लाम क्या है ?

क्या हम ब्रह्माण्ड को परिभाषित कर सकते हैं ? क्या इसके अस्तित्व के कारण को परिलक्षित कर सकते हैं ? जैसा कि हम जानते हैं कि कोई भी परिवार बिना किसी मुखिया के अच्छी प्रकार से जीवन व्यतीत नही कर सकता, कोई भी नगर बिना किसी उचित कार्यपालिका के प्रगति नही कर सकता, किसी भी देश का अस्तित्व बिना किसी राजनैतिक नेता के नही रह सकता। यह भी सार्वभौमिक सत्य है कि कोई भी वस्तु स्वयं नही बनी। प्रतिदिन हम यह देखते हैं कि ब्रह्माण्ड एक बहुत ही उचित ढंग से अपने पथ पर चल रहा है। तब क्या यह प्रश्न नही उठता कि क्या यह अचानक और ऐसे ही अस्तित्व में आया ? क्या हम मनुष्य के जन्म और समस्त संसार के अस्तित्व को किसी घटना से सम्बन्धित कर सकते हैं ?

मनुष्य इस विशाल ब्रह्माण्ड में एक छोटा– सा जीव है। यदि वह कोई योजना बनाता है तो योजना की विशेषता के लिए प्रोत्साहन चाहता है। उसी प्रकार उसका स्वयं आना और ब्रह्माण्ड का अस्तित्व भी एक योजना पर आधारित है।अर्थात हमारे भौतिक अस्तित्व मे पीछे कोई योजना है , और संसार की प्रत्येक वस्तु को कार्यबद्ध रखने के लिए एक अपार शक्ति है।

इस संसार में अवश्य कोई बड़ी शक्ति है जो हर चीज को एक उचित व्यवस्था में चला रही है। इस सुन्दर प्रकृति का अवश्य कोई सृष्टा है , जिसने सृष्टि का निर्माण किया, सुन्दर सृष्टि के बनाने का अवश्य ही कोई विशेष कारण है। विद्वान ज्ञानी व्यक्तियों ने उस स्रष्टा को पहचाना और उसे 'अल्लाह' ईश्वर के

नाम से पुकारा। वह कोई मनुष्य नही, क्योंकि मनुष्य स्वयं अपने जैसा दूसरा मनुष्य नही बना सकता, वह कोई जानवर नही, और न कोई पेड़ है। वह न मूर्ति है, और न किसी भी चीज़ का चित्र, क्योंकि यह सभी अपने जैसा अथवा दूसरी किसी चीज़ की सृष्टि नही कर सकती है। वह इन सबसे भिन्न है, क्योंकि वह स्रष्टा है, स्रष्टा के स्वभाव को सृष्टि के स्वभाव से भिन्न होना चाहिए। इस तरह स्रष्टा अनादि है, अनन्त है, अमर है।

" अल्लाह " (ईश्वर) को जानने के लिए बहुत से रास्ते हैं, उसके विषय में बताने के लिए बहुत सी बातें हैं। दुनिया में देखे जाने वाले बड़े आश्चर्य और चमत्कार एक खुली किताब की तरह हैं, जिनके द्वारा " अल्लाह " का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। अल्लाह ने स्वयं हमारी सहातार्थ कई दूत (रसूल) भेजे और उनका मार्गदर्शन दैव वाणी (वह्यी) से किया, ताकि वे अपनी जाति अथवा कौम के लोगों को अल्लाह का आदेश पहुंचा दें।

" इस्लाम " धर्म, अल्लाह के आदेश व शिक्षा जो उसने अपने रसूल हज़रत मुहम्मद (स०अ०व०) को अवतरित की , को पूर्ण रूप से स्वीकार करने को कहते हैं।

इस्लाम, अल्लाह से जो सम्बन्ध जोड़ता है, वह अल्लाह सर्वशक्तिमान और एक सच्चा खुदा है। इसी से पूरी सृष्टि में इन्सान की सही पदवी निर्धारित होती है। यह धारणा मनुष्य को हर प्रकार के भय और अंधविश्वास से मुक्ति दिला देती है, जब वह यह सोचता है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह अपने विशाल ज्ञान द्वारा हर जगह उपस्थित है और मनुष्य को उसी का होकर रहना चाहिए। मात्र विश्वास पर्याप्त

नही, तथा एक अल्लाह में विश्वास का अर्थ है कि हम सम्पूर्ण मानव जाति को एक परिवार समझें और अल्लाह को उसका संरक्षक, स्रष्टा और पालनकर्ता। इस्लाम प्रतिष्ठित जनों के किसी भी विचार का खण्डन करता है, उसके निकट यदि महत्व है, तो अल्लाह पर विश्वास और उसके आदेशानुसार व्यवहारिक जीवन व्यतीत करने का। इस प्रकार बिना किसी की मध्यस्यता के हर एक का सीधा सम्बन्ध स्थापित होता है।

इस्लाम कोई नया धर्म नही है। यह एक ही संदेश है जो सभी संदेष्टाओं आदम, नूह, इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, दाऊद , मूसा, ईसा (सल्लल्लाह अलैहिम अजमईन) द्वारा अल्लाह की ओर से प्रसारित किया जाता रहा है। परन्तु जो संदेश रसूल हज़रत मुहम्मद स०अ०व० को अवतरित किया गया, वह व्यापक, पूर्ण एवं अन्तिम है, और यही इस्लाम की आधारशिला है ।

कुरआन अल्लाह का अन्तिम अवतारित संदेश है और इस्लाम की शिक्षा और विधि इसी पर आधारित है। कुरआन का प्रमुख विषय विश्वास व आस्था, चरित्र व आचरण, मानवता का इतिहास, उपासना, ज्ञान, विवेक, अल्लाह से मनुष्य के सम्बन्ध और सामाजिक सम्बन्ध हैं। और वह इन विषयों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालता है। ऐसी सतर्क शिक्षाएं जिन पर सामाजिक न्याय, अर्थव्यवस्था, राजनीति विधि निर्माण, न्याय शास्त्र विधि और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की इमारतें खड़ी की जा सकती हैं, ये पवित्र कुरआन के कुछ प्रमुख विषय हैं।

रसूल हज़रत मुहम्मद स०अ०व० की शिक्षाओं, वचन और कर्म को हदीस कहते हैं। हदीस को पूरी सतर्कता

एवं सावधानी से आपके श्रद्धालु साथियों ने संग्रहीत और प्रचारित किया, ये हदीसें कुरआन की आयतों की व्याख्या एवं स्पष्टीकरण करती हैं।

इस्लाम में आस्था के प्रमुख नियम :-

एक सच्चा श्रद्धालु मुसलमान आस्था के निम्नलिखित नियमों पर विश्वास करता है -

१. एकेश्वरवाद (तौहीद) :- वह विश्वास करता है कि "अल्लाह" ईश्वर एक है, वह सर्वशक्तिमान, अन्नत, अनादि, दयालु, मेहरबान, स्रष्टा एवं पालन करता है।

२. ईश-दूतत्व (रिसालत) :- इस्लामी विश्वास में रिसालत (ईश-दूतत्व) का नियम यह है कि मुसलमान बिना किसी अपवाद के सभी पैग़म्बरों (ईश-दूतों) पर विश्वास करते हैं। अल्लाह ने हर कौम को एक या इससे अधिक ईश-दूत (रसूल) अथवा उपदेशक भेजे। अल्लाह ने उनका चयन स्वयं किया, ताकि वे मानव जाति को उसका संदेश पहुँचा दें, तथा उसके अनुसार मानव को शिक्षा दें। कुरआन में पच्चीस के नाम लिखित हैं, जिनमें हज़रत मुहम्मद स०अ०व० अन्तिम एवं प्रमुख हैं।

३. ईश्वरीय पुस्तकें :- मुसलमान अल्लाह की अवतरित सभी पुस्तकों पर आस्था रखते हैं। वे सभी अल्लाह के बताए हुए सीधे रास्ते पर प्रकाश डालती हैं, जो ईश-दूतों को प्राप्त हुई। कुरआन में विशेष रूप से हज़रत इब्राहीम, मूसा, दाऊद और ईसा को अवतरित की गई पुस्तकों का वर्णन मिलता है। कुरआन के हज़रत मुहम्मद स०अ०व० पर अवतरित होने से बहुत पहले, ये पुस्तकें या तो खो गई अथवा उनके स्वरूप को बदल दिया गया। आज यदि कोई मान्यता प्राप्त तथा पूर्ण अल्लाह की किताब अब भी

उपलब्ध है , तो वह कुरआन है।

४. फ़रिश्ते :- सच्चा मुसलमान अल्लाह के फरिश्तों पर विश्वास करते हैं। वे शुद्ध आत्मिक और विशेष सृष्टि हैं, जिनको प्रकृति खाना, पीना, सोना कुछ नही चाहती हैं। वे अपने दिन व रात अल्लाह की उपासना में व्यतीत करते हैं। वे विशेषता प्राप्त सेवक हैं, जिनको एक विशेष कार्य के लिए निर्धारित किया गया है। वे अल्लाह के समक्ष नही बोलते, वे केवल अल्लाह के आदेश का पालन करते हैं।

५. न्याय का दिन :- मुसलमान न्याय के दिन पर विश्वास करते हैं। एक दिन इस संसार का अन्त होना है, मरे हुए ज़िन्दा किए जाएंगे, ताकि उनको अन्तिम तथा उचित न्याय दिया जा सके। अच्छे कर्मो वाले व्यक्तियों को उचित फल मिलेगा और वे अल्लाह के स्वर्ग में पूर्ण सम्मान के साथ स्वागत किए जाएंगे। और जिनके कुकर्म होंगे, उनको दण्डित करके नरक में डाल दिया जाएगा।

६. भाग्य :- अच्छा या बुरा भाग्य जो अल्लाह ने अपने पूर्व ज्ञान के अनुसार लिख दिया है, पूर्ण सृष्टि को उसी के अनुसार चलना है। उसकी आज्ञा के बिना इस ब्रह्माण्ड में कुछ नही हो सकता। उसका ज्ञान एवं शक्ति हर समय अपनी सृष्टि पर आदेश करने के लिए क्रियाशील है। वह बुद्धिमान एवं दयालु है और जो भी करता है उसका कोई अवश्य ही अर्थ होता है। यदि हमारे दिल व दिमाग़ में यह स्थापित हो जाए तो हमारा विश्वास सही होगा , जिसका वह अधिकारी है, यद्पि हम पूर्णरूप से समझने योग्य न रहें या इसको बुरा समझें।

इस्लाम के पाँच स्तम्भ :- विश्वास, बिना प्रयोगात्मक एवं क्रियात्मक रूप से प्रकट किये बेकार है

, कि वह मुसलमान है। आस्था प्राकृतिक रूप से अति संवेदनशील है, इसको अतिप्रभावशाली, जीवन में प्रयोग करके ही किया जा सकता है। यदि इसको प्रयोग में न लाया जाए, तो इसकी शक्ति क्षीण होकर समाप्त हो जाती है।

इस्लाम के पाँच स्तम्भ हैं :-

१. ईमान की गवाही :- मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना योग्य नही और हज़रत मुहम्मद स०अ०व० उसके सेवक (बन्दे) और रसूल हैं। हज़रत मुहम्मद स०अ०व० की रिसालत का उद्देश्य यह है कि जीवन के हर अंग में मुसलमान आपके आदर्श जीवन को उदाहरणार्थ रखे।

२. नमाज़ :- प्रतिदिन की पाँच नमाज़ें प्रत्येक व्यस्क मुसलमान को अल्लाह द्वारा निर्धारित कर्तव्य के रूप में अदा करनी होती हैं। यह नमाज़ें अल्लाह में विश्वास को जीवन्त और सुदृढ़ बनाती हैं और मनुष्य को श्रेष्ठ चरित्र निर्माण पर उकसाती हैं। यह मन को शुद्ध करती हैं, और कुकर्मो और पाप से रोकती हैं। ये नमाज़ें निम्नलिखित हैं :-

१. फज्र की नमाज़ (प्रातःकाल की उपासना

२. जुहर की नमाज़ (मध्यान्ह की उपासना)

३. असर की नमाज़ (पूर्वान्ह की उपासना)

४. मग़रिब की नमाज़ (संध्याकाल की उपासना)

५. इशा की नमाज़ (रात्रिकाल की उपासना)

३. ज़कात :- ज़कात का शाब्दिक एवं साधारण अर्थ 'शुद्धि' है। परन्तु प्रयोगात्मक रूप से एक मुसलमान अपनी वार्षिक बचत का ढाई प्रतिशत

योग्य निर्धन व्यक्तियों को देता है। लेकिन धार्मिक एवं आत्मिक रूप से ज़कात का अर्थ बहुत गहरा एवं बहुत ही जीवन्त है। इसलिए इसकी एक मानवीय एवं सामाजिक–राजनैतिक मूल्य है।

४. रमज़ान के रोज़े :– मुसलमानों पर रमज़ान के महीने में खाने–पीने, स्त्रीगमन पर सुबह–सवेरे से लेकर सूर्यास्त तक निषेधाज्ञा लग जाती है। रोज़ा बुरे एवं गलत विचारों पर भी नियन्त्रण लगाता हैं। रोज़ा प्रेम, शुद्धता एवं भक्तिभाव उत्पन्न करता है। रोज़ा शुद्ध सामाजिक चेतना, धैर्य, नि:स्वार्थता, निष्ठा और मनोबल को विकसित करता है।

५. हज (मक्का की तीर्थयात्रा) :– इसको जीवन में एक बार करना है, यदि कोई मार्ग व्यय, स्वास्थ व अन्य व्यय के लिए समर्थ है, उसके लिए अनिवार्य है। यह सबसे बड़ा वार्षिक आस्था का सम्मेलन है, जहाँ दुनियाँ के मुसलमान एक दूसरे को समझते हैं, अपने पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन करते हैं और सामान्य विकास को विकसित करते हैं। यह इस्लाम की सार्वभौमिकता का प्रदर्शन है और मुसलमानों के भ्रातृत्व एवं समता के भाव को प्रदर्शित करता है।

इस्लाम की अधिक जानकारी के लिए अपने निकटवर्ती कार्यालय अथवा इस्लामिक प्रचार समुदाय से सम्पर्क स्थापित करें, अथवा अपने क्षेत्र के निकटवर्ती इस्लामी संघ या केन्द्र से सम्पर्क करें। फोन नं० ४०३०२५१ ।४०३४५१७। ४०३०१४२। ४०३१५८७। फैक्स: ४०५९३८७

مطابع دار طيبة - الرياض - ت ٤٢٨٣٨٤٠